Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

Original Article

बिहार विधानसभा चुनाव 2025 में एनडीए गठबंधन का प्रदर्शन (एक विश्लेषणात्मक अध्ययन)

डॉ० अजय कुमार ओझा
असिस्टेंट प्रोफेसर (अतिथि)
राजनीति विज्ञान विभाग
एस०एन०एस०आर०के०एस कालेज सहरसा बिहार
मेल आईडी - ojhaajay019@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2026-180331
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 3(A)
Pp. 162-167
March- 2026
Submitted: 25 Feb. 2026
Revised: 05 Mar. 2026
Accepted: 15 Mar. 2026
Published: 31 Mar. 2026

सार (Abstract)

बिहार विधानसभा चुनाव 2025 भारतीय संघीय लोकतंत्र के संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। चुनाव हमारे भारतीय लोकतांतरिक व्यवस्था की रीढ़ है जिसके बिना लोकतंत्र की परिकल्पना संभव नहीं *इस चुनाव में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) ने एक बार फिर राज्य की राजनीति में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराई* तथा विपक्ष को पुराने धरेके राजनीति से बाहर आने का एक एक मार्ग दिखाया।इस चुनाव ने गठबंधन के समीकरण कैसे हो कैसे गठबंधन मजबूत हो इन सभी पर ध्यान केंद्रित कर चुनावी प्रदर्शन को अपने पक्ष में करने के लिए "सभी का साथ सभी का विकास एवं सभी का विश्वास" के संकल्प को अपनाया। *यह शोध पत्र एनडीए गठबंधन के चुनावी प्रदर्शन, रणनीति, सामाजिक आधार, मुद्दों, नेतृत्व, संगठनात्मक क्षमता तथा विपक्ष की कमजोरियों का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है। साथ ही यह अध्ययन बिहार की राजनीति में एनडीए की निरंतरता, बदलते मतदाता व्यवहार और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं पर इसके प्रभाव को भी रेखांकित करता है।*

मुख्य शब्द: *बिहार विधानसभा चुनाव 2025, एनडीए, भाजपा, जद(यू), चुनावी राजनीति, गठबंधन राजनीति*

1. भूमिका

भारतीय लोकतंत्र में राज्य विधानसभा चुनाव न केवल क्षेत्रीय राजनीति को दिशा देते हैं, बल्कि राष्ट्रीय राजनीति को भी प्रभावित करते हैं। बिहार, अपनी सामाजिक विविधता, जटिल जातीय संरचना और राजनीतिक चेतना के कारण, भारतीय राजनीति की प्रयोगशाला माना जाता है।[1]

बिहार विधानसभा चुनाव 2025 ऐसे समय में हुए जब देश में गठबंधन राजनीति पुनः निर्णायक भूमिका में आ चुकी थी। राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए), जिसमें प्रमुख रूप से भारतीय जनता पार्टी (भाजपा), जनता दल (यूनाइटेड) [जद(यू)] और अन्य सहयोगी दल शामिल थे, ने इस चुनाव को राज्य की स्थिरता और विकास के जनादेश के रूप में प्रस्तुत किया।[2]

यह शोध पत्र इस बात का विश्लेषण करता है कि एनडीए ने किन कारकों के माध्यम से चुनावी सफलता प्राप्त की और इसके प्रदर्शन का बिहार की राजनीति पर क्या दीर्घकालिक प्रभाव पड़ सकता है। इस शोध-पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

बिहार विधानसभा चुनाव 2025 में एनडीए गठबंधन के समग्र प्रदर्शन का विश्लेषण करना, जिसमें सीटों की संख्या, मत-प्रतिशत तथा क्षेत्रीय वितरण शामिल हो।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
डॉ० अजय कुमार ओझा , असिस्टेंट प्रोफेसर (अतिथि) राजनीति विज्ञान विभाग एस. एन.एस.आर.के.एस कालेज सहरसा बिहार

How to cite this article:
ओझा, . अजय. कुमार. (2026). बिहार विधानसभा चुनाव 2025 में एनडीए गठबंधन का प्रदर्शन (एक विश्लेषणात्मक अध्ययन). Journal of Research & Development, 18(3(A)), 162–167.
https://doi.org/10.5281/zenodo.19639038

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.19639038
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

शोध का उद्देश्य

एनडीए गठबंधन में सम्मिलित विभिन्न दलों (जैसे—भाजपा, जद(यू), लोजपा आदि) के आपसी तालमेल, सीट बंटवारे और चुनावी रणनीति का अध्ययन करना।

मतदाताओं के व्यवहार (Voting Behaviour) पर सामाजिक, आर्थिक, जातीय, क्षेत्रीय एवं राजनीतिक कारकों के प्रभाव का विश्लेषण करना।

यह समझना कि केंद्र और राज्य सरकार की नीतियाँ, योजनाएँ तथा नेतृत्व एनडीए के चुनावी प्रदर्शन को किस प्रकार प्रभावित करती हैं।

विपक्षी गठबंधनों की तुलना में एनडीए की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन करना, जिससे चुनावी प्रतिस्पर्धा की वास्तविक तस्वीर सामने आ सके।

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में एनडीए के समर्थन आधार का पृथक-पृथक मूल्यांकन करना।

बिहार की राजनीति में एनडीए गठबंधन के भविष्य की संभावनाओं और चुनौतियों का आकलन करना।

शोध विधि

यह अध्ययन मुख्यतः वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध-विधि पर आधारित है। शोध-विधि के प्रमुख घटक निम्नलिखित हैं—

(क) शोध का स्वरूप

यह शोध वर्णनात्मक (Descriptive) तथा विश्लेषणात्मक (Analytical) प्रकृति का है, जिसमें तथ्यों का संकलन कर उनकी व्याख्या की जाएगी।

(ख) आंकड़ों के स्रोत

(i) प्राथमिक स्रोत (Primary Sources) निर्वाचन आयोग द्वारा प्रकाशित चुनावी परिणाम समाचार पत्रों, टीवी डिबेट्स एवं राजनीतिक भाषणों का अवलोकन एवं चुनावी घोषणापत्र (Manifestos)

(ii) द्वितीयक स्रोत (Secondary Sources) पुस्तकें, शोध-पत्र, पत्रिकाएँ सरकारी रिपोर्टें, सांख्यिकीय आंकड़े, प्रतिष्ठित समाचार पत्र (जैसे—द हिंदू, इंडियन एक्सप्रेस, दैनिक जागरण , हिंदुस्तान, आज, दैनिक भास्करआदि) एवं ऑनलाइन राजनीतिक डेटाबेस

(ग) अध्ययन क्षेत्र

यह अध्ययन बिहार राज्य की विधानसभा सीटों पर एनडीए का प्रदर्शन

2. बिहार की राजनीति और गठबंधन परंपरा

बिहार में गठबंधन राजनीति का इतिहास लंबा रहा है। 1990 के दशक से ही जाति आधारित राजनीति, सामाजिक न्याय और क्षेत्रीय अस्मिता ने चुनावी समीकरणों को प्रभावित किया है।[3]

एनडीए ने बिहार में "विकास + सुशासन" के विमर्श को सामाजिक न्याय की राजनीति के साथ जोड़ने का प्रयास किया। जद(यू) के सामाजिक आधार और भाजपा के संगठनात्मक विस्तार ने गठबंधन को व्यापक जनसमर्थन दिलाया।[4]

3. एनडीए गठबंधन की संरचना (2025)

2025 के विधानसभा चुनाव में एनडीए गठबंधन में निम्न प्रमुख घटक शामिल थे—

पार्टी का नाम।	**सीटें (जीती)**
भारतीय जनता पार्टी (BJP)।	लगभग 89 सीटें
जनता दल (United) – JDU।	लगभग 85 सीटें
लोक जनशक्ति पार्टी (राम विलास) – LJP (RV)	लगभग 19 सीटें
हिंदुस्तानी अवाम मोर्चा (Secular) – HAM(S)	लगभग 5 सीटें
राष्ट्रीय लोक मोर्चा (RLM)	लगभग 4 सीटें
कुल NDA ताल्लुक	202 सीटें (243 में से)

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा)

जनता दल (यूनाइटेड)

लोक जनशक्ति पार्टी (समूह)

हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा (HAM)

इस गठबंधन ने सीट-बँटवारे में अपेक्षाकृत संतुलन बनाए रखा, जिससे आपसी टकराव कम हुआ।[5]

4. चुनावी रणनीति और अभियान

4.1 नेतृत्व की भूमिका

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

एनडीए के चुनावी अभियान में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की संयुक्त छवि को प्रमुखता दी गई। "डबल इंजन सरकार" के नारे ने विकास और केंद्र–राज्य समन्वय को चुनावी मुद्दा बनाया।[6] शीर्ष नेतृत्व ने टिकट बंटवारे में उन लोगों पर विश्वास जताया जिनका अपना वजूद उस विधानसभा में था जहां से वे लड़ना चाह रहे थे।

एनडीए ने बिहार विधानसभा में स्पष्ट बहुमत के आसपास/बहुमत प्राप्त कर सरकार बनाने की स्थिति बनाई। भाजपा गठबंधन में सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी, जबकि जद(यू) ने क्षेत्रीय संतुलन बनाए रखा।[10]

सीट वितरण से स्पष्ट होता है कि एनडीए की रणनीति केवल सीट जीतने तक सीमित नहीं थी, बल्कि सामाजिक प्रतिनिधित्व बनाए रखने पर भी केंद्रित थी।[11]

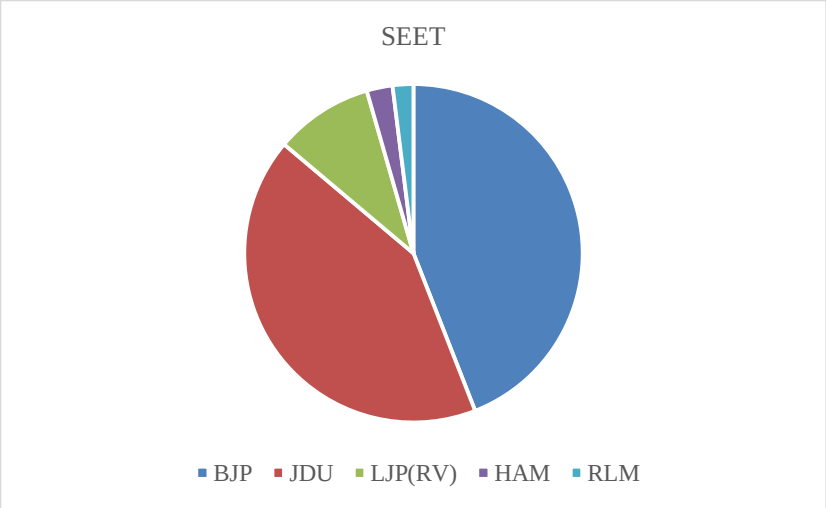

4.2 मुद्दों का चयन

क्रमांक	मुद्दा	एनडीए महाकठबंधन	महागठबंधन	विश्लेषणात्मक टिप्पणी
1	विकास का दृष्टिकोण	बुनियादी ढाँचा, सड़क–पुल, बिजली, डिजिटल कनेक्टिविटी	सामाजिक न्याय आधारित विकास, क्षेत्रीय संतुलन	एनडीए का जोर भौतिक विकास पर, विपक्ष का सामाजिक समावेशन पर
2	रोजगार नीति	कौशल विकास, स्टार्ट-अप, निजी निवेश	सरकारी नौकरियाँ, भर्ती प्रक्रिया में तेजी	एनडीए दीर्घकालिक रोजगार मॉडल, विपक्ष त्वरित राहत पर केंद्रित
3	कानून-व्यवस्था	सख्त कानून व्यवस्था, अपराध पर नियंत्रण	प्रशासनिक सुधार, पुलिस जवाबदेही	एनडीए की "सुशासन" छवि, विपक्ष की आलोचनात्मक रणनीति
4	महिला सशक्तिकरण	स्वयं सहायता समूह, आर्थिक सहायता, सुरक्षा	आरक्षण, सामाजिक सुरक्षा, महंगाई से राहत	एनडीए की योजनाएँ ज़मीनी स्तर पर दिखने के कारण महिलाओं में भरोसा बना
5	गरीबी और सामाजिक न्याय	लक्षित लाभार्थी योजनाएँ (DBT, आवास, शौचालय)	व्यापक सामाजिक न्याय, जाति आधारित असमानता पर ज़ोर	महागठबंधन का नैतिक तर्क मजबूत, पर संगठनात्मक कमजोरी सामने आई
6	कृषि और किसान	सिंचाई, सड़क, सीधी आर्थिक सहायता	MSP की कानूनी गारंटी, कर्ज़ माफी	किसानों में मुद्दा असरदार रहा, पर निर्णायक वोट में नहीं

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

				बदला
7	जातीय राजनीति	सीमित, विकास-आधारित पहचान	स्पष्ट जाति आधारित गोलबंदी	बिहार में जाति अब भी महत्वपूर्ण, पर अकेले निर्णायक नहीं रही
8	नेतृत्व का प्रश्न	अनुभवी और स्थिर नेतृत्व की छवि	युवा नेतृत्व और परिवर्तन का दावा	मतदाताओं ने अनुभव और स्थिरता को प्राथमिकता दी
9	चुनावी रणनीति	मजबूत संगठन, बूथ मैनेजमेंट, स्पष्ट संदेश	साझा एजेंडा लेकिन समन्वय की कमी	संगठनात्मक मजबूती ने एनडीए को निर्णायक बढ़त दिलाई

एनडीए ने विकास + सुशासन + योजनाओं के प्रत्यक्ष लाभ को चुनाव का केंद्र बनाया जो कि चुनावी परिणाम को अपने पक्ष में कारगर सिद्ध हुआ। महागठबंधन ने सामाजिक न्याय + बेरोज़गारी + असमानता को मुद्दा बनाया, पर संगठन और भरोसे की कमी रही। 2025 के चुनाव में बिहार की राजनीति में यह संकेत मिला कि जाति के साथ-साथ विकास और प्रशासनिक प्रदर्शन निर्णायक हो रहे हैं।

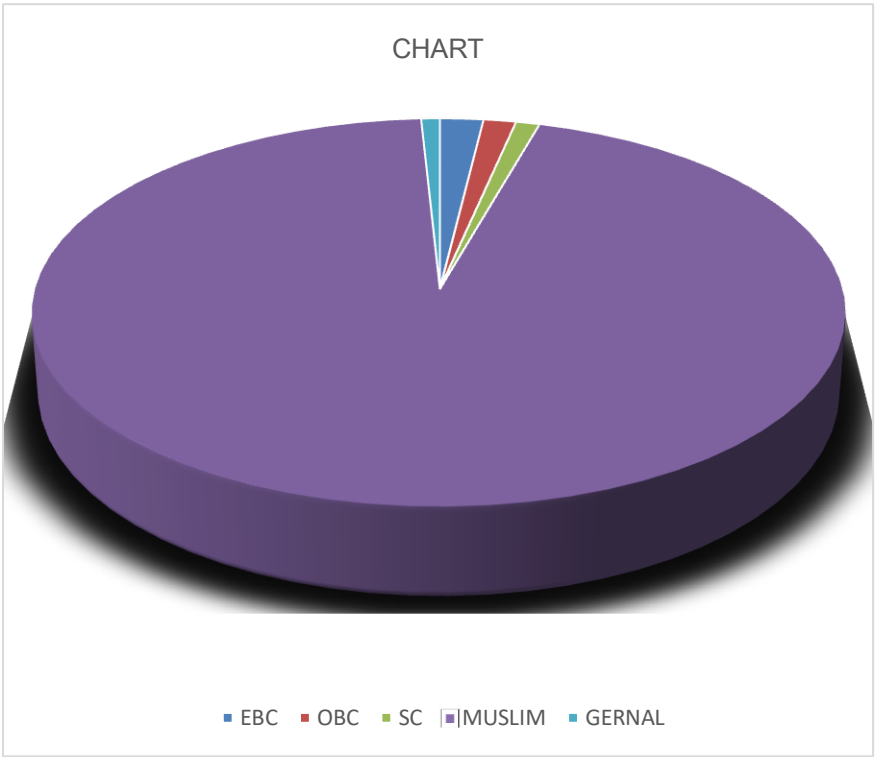

5. सामाजिक आधार और मतदान व्यवहार

5.1 जातीय समीकरण

बिहार की आबादी में मुख्य जातिगत समूह इस प्रकार हैं (2023 जाति आधारित गणना अनुसार)

2025 में NDA के विधायकों में मुख्य 5 जातीय समूहों का हिस्सा लगभग 44% रहा, जबकि महागठबंधन का हिस्सा करीब 69% रहा। वर्गों के आधार पर यह दर्शाता है कि एनडीए ने उच्च जातियों, अति पिछड़ा वर्ग, महिलाओं और शहरी मतदाताओं में मजबूत पकड़ बनाए रखी।[8]

5.2 महिला मतदाताओं की भूमिका

महिलाओं ने 2025 के बिहार विधानसभा चुनाव में सबसे ज़्यादा मतदान किया, और उनका 71% से अधिक turnout इस चुनाव की खास बात रहा। अप्रत्याशित जीत यह दर्शाती है कि महिलाओं का रुझान एनडीए की तरफ रहा महिला मतदाताओं में सरकारी योजनाओं और सुरक्षा के मुद्दों के कारण एनडीए को उल्लेखनीय समर्थन मिला।[9]

6. एनडीए का चुनावी प्रदर्शन (विश्लेषणात्मक दृष्टि)

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

बिहार विधानसभा चुनाव 2025 में एनडीए ने निर्णायक और व्यापक जीत दर्ज की, परंतु किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था में विजय का वास्तविक मूल्यांकन केवल उपलब्धियों से नहीं, बल्कि आत्मालोचनात्मक दृष्टि से भी किया जाना चाहिए। एनडीए का प्रदर्शन कई दृष्टियों से सफल रहा, किंतु इसके साथ कुछ ऐसे पक्ष भी उभरते हैं जिन पर भविष्य के लिए गंभीर चिंतन आवश्यक है।

एनडीए की सबसे बड़ी ताकत उसका संगठित नेतृत्व और स्पष्ट राजनीतिक दिशा रही। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की राष्ट्रीय छवि, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का प्रशासनिक अनुभव और भाजपा-जद(यू) का मजबूत संगठनात्मक ढांचा मतदाताओं को भरोसा देने में सफल रहा। विकास, कानून-व्यवस्था, बुनियादी ढांचे और कल्याणकारी योजनाओं को चुनावी विमर्श का केंद्र बनाकर एनडीए ने जाति-आधारित राजनीति से ऊपर उठने का संदेश दिया। यह रणनीति विशेष रूप से महिलाओं, युवाओं और गैर-यादव पिछड़ा वर्ग में प्रभावी सिद्ध हुई।

हालाँकि आत्मक दृष्टि से देखें तो यह भी सच है कि एनडीए की जीत आंशिक रूप से विपक्ष की कमजोरियों पर भी आधारित रही। महागठबंधन की आंतरिक असहमति, अस्पष्ट नेतृत्व और बिखरी रणनीति ने एनडीए के लिए राह आसान की। ऐसे में यह प्रश्न उठता है कि क्या एनडीए की नीतियाँ उतनी ही प्रभावी होतीं यदि विपक्ष संगठित और विश्वसनीय विकल्प के रूप में सामने आता। अतः एनडीए को आत्मसंतोष से बचते हुए अपनी नीतियों की वास्तविक जन-प्रभावशीलता का आकलन करना चाहिए।

एक अन्य आत्मालोचनात्मक पहलू स्थानीय मुद्दों की अनदेखी से जुड़ा है। कई क्षेत्रों में बेरोजगारी, शिक्षा की गुणवत्ता, स्वास्थ्य सेवाओं और पलायन जैसे प्रश्न मतदाताओं के लिए अहम रहे, किंतु चुनावी अभियान में इन पर अपेक्षाकृत कम गहराई से चर्चा हुई। एनडीए को राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय उपलब्धियों के साथ-साथ क्षेत्रीय असंतोष को भी गंभीरता से संबोधित करना होगा, अन्यथा भविष्य में यही मुद्दे असंतोष का कारण बन सकते हैं।

इसके अतिरिक्त, जातीय और सामाजिक संतुलन एनडीए की मजबूती रहा, परंतु इसे स्थायी मान लेना जोखिमपूर्ण हो सकता है। यदि सामाजिक न्याय, आरक्षण, और वंचित वर्गों की आकांक्षाओं पर नीतिगत स्तर पर निरंतर काम नहीं हुआ, तो समर्थन का यह संतुलन कमजोर पड़ सकता है। आत्मक समीक्षा यह संकेत देती है कि केवल चुनावी समीकरण नहीं, बल्कि सामाजिक संवाद और भरोसे की राजनीति को भी आगे बढ़ाना आवश्यक है।

अंततः, एनडीए का चुनावी प्रदर्शन प्रशासनिक दक्षता, संगठनात्मक शक्ति और नेतृत्व की स्पष्टता का परिणाम रहा, किंतु आत्मालोचनात्मक दृष्टि से यह जीत एक जिम्मेदारी भी है। यह जनादेश केवल सत्ता का समर्थन नहीं, बल्कि अपेक्षाओं का भार भी है। यदि एनडीए इस आत्मक समीक्षा को स्वीकार कर नीतियों में संवेदनशीलता, पारदर्शिता और समावेशन को प्राथमिकता देता है, तभी यह चुनावी सफलता दीर्घकालिक राजनीतिक विश्वास में बदल सकेगी।

7. विपक्ष की स्थिति और एनडीए को लाभ

बिहार विधानसभा चुनाव 2025 में विपक्ष आपसी एकजुटता, स्पष्ट नेतृत्व और प्रभावी रणनीति के अभाव में कमजोर साबित हुआ। सीट बंटवारे, प्रचार और संदेश में असंगति के कारण उसका पारंपरिक वोट बैंक भी पूरी तरह संगठित नहीं हो सका। इसके विपरीत एनडीए ने संगठित गठबंधन, मजबूत नेतृत्व और विकास-कल्याण के एजेंडे को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया। जातीय संतुलन, महिला मतदाताओं की सक्रिय भागीदारी और बेहतर बूथ-स्तरीय प्रबंधन ने एनडीए को बढ़त दिलाई। इन सभी कारणों से जनता का विश्वास एनडीए के पक्ष में गया और उसे स्पष्ट बहुमत प्राप्त हुआ। एनडीए ने बिहार विधानसभा में स्पष्ट बहुमत के आसपास/बहुमत प्राप्त कर सरकार बनाने की स्थिति बनाई। भाजपा गठबंधन में सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी, जबकि जद(यू) ने क्षेत्रीय संतुलन बनाए रखा।[10] सीट वितरण से स्पष्ट होता है कि एनडीए की रणनीति केवल सीट जीतने तक सीमित नहीं थी, बल्कि सामाजिक प्रतिनिधित्व बनाए रखने पर भी केंद्रित थी।[11] महागठबंधन के भीतर नेतृत्व की अस्पष्टता, आंतरिक मतभेद और मुद्दों की असंगति ने एनडीए को रणनीतिक लाभ पहुँचाया।[12]

8. मीडिया, प्रचार और डिजिटल रणनीति

एनडीए ने पारंपरिक प्रचार के साथ-साथ सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म का प्रभावी उपयोग किया। इससे युवा और पहली बार मतदान करने वाले मतदाताओं तक पहुँच संभव हुई।[13]

9. लोकतांत्रिक दृष्टि से मूल्यांकन

बिहार विधानसभा चुनाव 2025 भारतीय लोकतंत्र के एक महत्वपूर्ण अध्याय के रूप में सामने आया। यह चुनाव केवल सत्ता परिवर्तन या निरंतरता का निर्णय नहीं था, बल्कि मतदाता जागरूकता, राजनीतिक प्रतिस्पर्धा, सामाजिक भागीदारी और लोकतांत्रिक

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

मूल्यों की परीक्षा भी था। लोकतांत्रिक दृष्टि से इसका मूल्यांकन करते समय यह देखना आवश्यक है कि जनता की भागीदारी, चुनावी प्रक्रिया की निष्पक्षता, राजनीतिक विमर्श की गुणवत्ता और परिणामों की स्वीकार्यता किस स्तर तक लोकतंत्र को मजबूत करती है।

सबसे पहले, मतदाता सहभागिता लोकतंत्र की सुदृढ़ता का प्रमुख संकेतक होती है। 2025 के बिहार चुनाव में उच्च मतदान प्रतिशत, विशेषकर महिलाओं की बढ़ती भागीदारी, यह दर्शाती है कि लोकतांत्रिक चेतना समाज के निचले स्तर तक पहुंच रही है। ग्रामीण क्षेत्रों, महिलाओं और पिछड़े वर्गों की सक्रिय उपस्थिति ने यह प्रमाणित किया कि लोकतंत्र केवल शहरी या शिक्षित वर्ग तक सीमित नहीं रहा। यह लोकतंत्र की समावेशी प्रकृति का सकारात्मक संकेत है।

दूसरा महत्वपूर्ण पहलू चुनावी प्रक्रिया की विश्वसनीयता है। निर्वाचन आयोग द्वारा शांतिपूर्ण मतदान, सुरक्षा प्रबंध और चरणबद्ध चुनाव संचालन ने जनता के विश्वास को मजबूत किया। बड़े पैमाने पर हिंसा, भय या व्यवस्थित धांधली की अनुपस्थिति यह दर्शाती है कि संस्थागत लोकतंत्र बिहार जैसे सामाजिक रूप से जटिल राज्य में भी स्थिर हो रहा है। परिणामों को सभी प्रमुख दलों द्वारा स्वीकार करना लोकतांत्रिक परिपक्वता का प्रमाण है।

हालाँकि लोकतांत्रिक मूल्यांकन में राजनीतिक विमर्श की गुणवत्ता पर भी प्रश्न उठते हैं। चुनावी बहस कई बार विकास, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे मूल मुद्दों से हटकर जाति, पहचान और भावनात्मक अपीलों तक सीमित रही। यह दर्शाता है कि भारतीय लोकतंत्र में अभी भी नीति-केंद्रित राजनीति को और सशक्त करने की आवश्यकता है। विपक्ष की कमजोर भूमिका और प्रभावी वैकल्पिक दृष्टि का अभाव भी लोकतांत्रिक संतुलन के लिए चिंता का विषय रहा। एक अन्य लोकतांत्रिक पहलू विपक्ष की भूमिका से जुड़ा है। लोकतंत्र में मजबूत विपक्ष सत्ता को जवाबदेह बनाता है, किंतु इस चुनाव में विपक्ष का कमजोर प्रदर्शन सत्ता पक्ष के लिए चुनौती कम और लोकतांत्रिक बहस के लिए नुकसान अधिक प्रतीत हुआ। यह स्थिति भविष्य में नीति-निर्माण में एकतरफा दृष्टिकोण के खतरे को जन्म दे सकती है।

अंततः, बिहार विधानसभा चुनाव 2025 लोकतांत्रिक रूप से एक सफल किंतु आत्ममंथन की मांग करने वाली प्रक्रिया रहा। यह चुनाव दिखाता है कि जनता मतदान के माध्यम से अपनी राय व्यक्त करने में सक्षम और सक्रिय है, संस्थाएँ अपेक्षाकृत मजबूत हैं, परंतु राजनीतिक विमर्श की गुणवत्ता और विपक्ष की मजबूती जैसे क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता बनी हुई है। यदि इन पहलुओं पर गंभीर प्रयास किए जाएँ, तो यह चुनाव भारतीय लोकतंत्र को और अधिक परिपक्व, उत्तरदायी और समावेशी बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हो सकता है।

एनडीए का प्रदर्शन यह दर्शाता है कि भारतीय लोकतंत्र में गठबंधन राजनीति अब अधिक संगठित और रणनीतिक हो चुकी है। हालाँकि, यह भी आवश्यक है कि सत्ता में आने के बाद लोकतांत्रिक संस्थाओं और विपक्ष की भूमिका को समान महत्व दिया जाए।[14]

निष्कर्ष

बिहार विधानसभा चुनाव 2025 में एनडीए गठबंधन का प्रदर्शन उसकी संगठनात्मक क्षमता, स्पष्ट नेतृत्व, सामाजिक संतुलन और विकासोन्मुख एजेंडा का परिणाम था। यह चुनाव बिहार की राजनीति में स्थिरता का संकेत देता है, किंतु साथ ही यह लोकतांत्रिक जवाबदेही की निरंतर आवश्यकता को भी रेखांकित करता है। एनडीए की सफलता केवल चुनावी नहीं, बल्कि राजनीतिक प्रबंधन और गठबंधन कौशल की भी सफलता है। आने वाले वर्षों में यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि यह जनादेश शासन में किस प्रकार रूपांतरित होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1] कोठारी, राजनी. भारतीय राजनीति, पृ. 45–50.
[2] गुहा, रामचंद्र. गांधी के बाद भारत, पृ. 610–615.
[3] जाफ़रलॉट, क्रिस्टोफ़. भारत की जाति राजनीति, पृ. 120–128.
[4] ऑस्टिन, ग्रैनविल. भारतीय संविधान: एक राष्ट्र की आधारशिला, पृ. 210–215.
[5] भारत निर्वाचन आयोग. बिहार विधानसभा चुनाव रिपोर्ट, पृ. 18–22.
[6] वही, पृ. 35–38.
[7] मेहता, प्रताप भानु. लोकतंत्र का भार, पृ. 89–94.
[8] जाफ़रलॉट, क्रिस्टोफ़, वही, पृ. 140–145.
[9] द्रेज़, जीन एवं सेन, अमर्त्य. अनिश्चित गौरव, पृ. 22–29.
[10] निर्वाचन आयोग, वही, पृ. 60–65.
[11] गुहा, रामचंद्र, वही, पृ. 640–645.
[12] कोठारी, राजनी, वही, पृ. 175–180.
[13] भार्गव, राजीव. राजनीतिक सिद्धांत, पृ. 300–305.
[14] सेन, अमर्त्य. विकास और स्वतंत्रता, पृ. 180–185.